Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LII (52), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

पूजा कुमार*

* शोधार्थी, मायादेवी इंस्टिटयूट ऑफ एडवासं एजुकेशन, उज्जैन रोड़, देवास (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – यह समीक्षा-पत्र उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के विभिन्न आयामों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसमें विशेष रूप से लिंग (बालक-बालिका), विद्यालय प्रकार (सरकारी बनाम निजी) तथा भौगोलिक स्थिति (शहरी बनाम ग्रामीण) के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि में पाए जाने वाले अंतरालों का विश्लेषण भारतीय शोधों के संदर्भ में किया गया है। साहित्य समीक्षा द्वारा केवल भारत में किए गए हालिया अध्ययनों (वर्ष 2000-2025) को संकलित किया गया, जिनसे पता चलता है कि उच्च माध्यमिक परीक्षाओं में बालिकाएँ औसतन बालकों से बेहतर प्रदर्शन कर रही हैं। उदाहरण के लिए, राष्ट्रीय स्तर पर सीबीएसई की कक्षा 12 परीक्षाओं में बालिकाओं का उत्तीर्ण प्रतिशत बालकों से लगभग 6% अधिक दर्ज किया गया है, जो इस प्रवृत्ति की पुष्टि करता है। विषय-विशेष के अनुसार यह अंतराल परिवर्तनीय पाया गया है। इसी प्रकार, निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि कई अध्ययनों में सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों से श्रेष्ठ सिद्ध हुई है। शहरी और ग्रामीण छात्रों की उपलब्धि के बीच अंतर कुछ शोधों में कम या नगण्य पाया गया है, हालांकि ग्रामीण क्षेत्र में शैक्षिक संसाधनों की तुलनात्मक कमी को ध्यान में रखते हुए विशेष प्रयासों की आवश्यकता रेखांकित की गई है। इस समीक्षा के निष्कर्ष शिक्षा में समानता सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण संकेत प्रदान करते हैं। प्राप्त परिणामों के आधार पर नीतिगत सिफारिशें की गई हैं, जिनमें बालकों की उपलब्धि में सुधार, सरकारी विद्यालयों की गुणवत्ता में वृद्धि, और ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षिक सुविधाओं के सुदृढ़ीकरण पर बल दिया गया है।

शब्द कुंजी – शैक्षिक उपलब्धि, उच्च माध्यमिक शिक्षा, लिंग भेद, सरकारी एवं निजी विद्यालय, शहरी एवं ग्रामीण, तुलनात्मक अध्ययन, शैक्षिक असमानताएँ, भारत।

प्रस्तावना – शैक्षिक उपलब्धि किसी भी विद्यार्थी के शैक्षणिक विकास का प्रमुख मानदंड होती है। विशेषकर उच्च माध्यमिक स्तर (कक्षा 11-12) पर विद्यार्थी की उपलब्धि भविष्य की उच्च शिक्षा, व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश तथा करियर की दिशा निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है[1], भट (2015) ने रेखांकित किया है कि इस स्तर की शैक्षिक सफलता भविष्य में विषय-चयन, विशेषज्ञता एवं व्यक्ति के व्यवसाय व सामाजिक प्रतिष्ठा तक को प्रभावित करती है[1], अत: उच्च माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक उपलब्धि में पाए जाने वाले अंतरों का विश्लेषण किया जाना अत्यंत आवश्यक है ताकि उनके कारणों को समझकर निराकरण किया जा सके[2]। भारत के शैक्षणिक परिदृश्य में विभिन्न कारकों के आधार पर विद्यार्थियों की उपलब्धि स्तरों में अंतर देखे गए हैं। लैंगिक दृष्टि से पिछले कुछ वर्षों में एक सकारात्मक परिवर्तन यह रहा है कि बालिकाएँ कई परीक्षाओं में बालकों से बेहतर प्रदर्शन कर रही हैं[3]। उदाहरणत: 2025 में सीबीएसई की कक्षा 12 बोर्ड परीक्षा परिणामों में बालिकाओं का उत्तीर्ण प्रतिशत (91.6%) बालकों के प्रतिशत (85.7%) से काफी अधिक रहा[3]। दूसरी ओर, विद्यालय के प्रकार अनुसार भी महत्वपूर्ण असमानताएँ दिखाई देती हैं। अनेक अध्ययनों में यह पाया गया है कि निजी विद्यालयों के छात्र शैक्षिक प्रदर्शन में सरकारी विद्यालयों के छात्रों से आगे रहते हैं[4]। जम्मू-कश्मीर के कुलगाम जिले में हुए एक शोध में निजी बनाम सरकारी उच्च माध्यमिक छात्रों के औसत अंकों में स्पष्ट व सांख्यिकीय रूप से महत्तवपूर्ण अंतर देखा गया[4]। इसी तरह, किंगडन (1996) के अध्ययन ने शहरी भारत में निजी स्कूलों की गुणवत्ता व परिणामों को सरकारी स्कूलों की तुलना में बेहतर आंका था[5]। भौगोलिक आधार पर भी लंबे समय से अंतर मौजूद हैं - सामान्यत: शहरी क्षेत्रों के विद्यालयों को संसाधन, शिक्षकों की उपलब्धता आदि में बढ़त मिलती रही है, जबकि ग्रामीण विद्यालयों को चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। 2021 की जनगणना के आंकड़ों के अनुसार ग्रामीण भारत में साक्षरता दर (71.5%) शहरी क्षेत्रों (86.5%) से काफी कम थी[6], जो ग्रामीण-शहरी शिक्षा अंतर को दर्शाती है। हालांकि, हाल के कुछ अध्ययनों से संकेत मिलता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर शहरी और ग्रामीण छात्रों की उपलब्धियों में अंतर कम होता जा रहा है[7]।

इन प्रवृत्तियों के मद्देनजर, यह आवश्यक है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर लिंग, विद्यालय प्रकार तथा भौगोलिक स्थिति के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि के अंतर का समग्र रूप से अध्ययन किया जाए। प्रस्तुत शोध-पत्र इसी उद्देश्य से संबंधित भारतीय शोध साहित्य की समीक्षात्मक प्रस्तुति करता है। इसमें पूर्व प्रकाशित अध्ययनों के निष्कर्षों का विश्लेषण कर विभिन्न श्रेणियों के मध्य उपलब्धि-अंतर की तुलना की गई है। आगे के खंडों में क्रमश: साहित्य समीक्षा, शोध की पद्धति, तुलनात्मक विश्लेषण, चर्चा तथा निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं।

साहित्य समीक्षा

लिंग के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि – भारत में उच्च माध्यमिक स्तर पर

बालक एवं बालिका विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि संबंधी निष्कर्ष विविध रहे हैं। कई अध्ययनों ने दर्शाया है कि बालिकाएँ अकादमिक प्रदर्शन में बालकों से श्रेष्ठ रहती हैं। सुमन एवं शर्मा (2025) के हरियाणा स्थित अध्ययन में 800 उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों के समूह में बालिका छात्रों का औसत परीक्षा प्रदर्शन बालकों की अपेक्षा उल्लेखनीय रूप से उच्च पाया गया[9]। वहीं दूसरी ओर, कुछ अनुसंधानों में लैंगिक अंतर नगण्य भी हुआ है। केरल राज्य में शाजिमोन और जोसफ (2017) द्वारा 400 छात्रों पर किए गए एक सर्वेक्षण में बालक एवं बालिका विद्यार्थियों की उपलब्धि के औसत अंकों में कोई भी सांख्यिकीय रूप से महत्त्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया[9]। यह निष्कर्ष इंगित करता है कि सभी परिस्थितियों में लिंग अपने-आप में प्रारंभीक सफलता का निर्धारक कारक नहीं होता है[10]। विषय-विशेष के स्तर पर भी जेंडर अंतराल अलग-अलग हो सकते हैं। उदाहरणस्वरूप, मेघालय के रि-भोइ जिले में मलाइ एवं हम्तसो (2025) ने सेकेंडरी स्तर पर चार प्रमुख विषयों में बालक-बालिका के प्रदर्शन की तुलना की। उन्होंने पाया कि समग्र अकादमिक प्रदर्शन में लिंग-अंतर असंगत था, परंतु अंग्रेजी विषय में बालिकाओं के अंक बालकों से सम्पूर्ण रूप से अधिक थे जबकि गणित, विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान विषयों में लड़के-लड़कियों के बीच कोई खास अंतर नहीं था[11]। इससे पता चलता है कि भाषा एवं संचार कौशल संबंधी क्षेत्रों में बालिकाएँ बेहतर कर सकती हैं, जबकि गणित/विज्ञान जैसे क्षेत्रों में प्रदर्शन लगभग समान स्तर का रहता है। समग्र रूप में, राष्ट्रीय परीक्षा परिणाम भी बालिकाओं की बढ़त को समर्थन देते हैं - हालिया आंकड़ों के मुताबिक उच्च माध्यमिक परीक्षाओं में बालिकाओं की उत्तीर्ण दर बालकों की दर से 5-6% अधिक रहना आम हो गया है[3]। इन प्रवृत्तियों के बावजूद, कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में लड़कों ने बेहतर किया हो, ऐसी संभावनाएँ भी शोध में नकारी नहीं गई हैं, अत: लिंग और शैक्षिक उपलब्धि के संबंध को प्रभावित करने वाले सामाजिक-पारिवारिक कारकों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

विद्यालय प्रकार (सरकारी बनाम निजी) के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि- विद्यालय के प्रबंधन एवं प्रकार का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर गहरा प्रभाव पाया गया है। भारत में हुए अधिकांश तुलनात्मक अध्ययनों से यह निष्कर्ष निकला है कि निजी विद्यालयों के विद्यार्थी शैक्षणिक प्रदर्शन में सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों से आगे रहते हैं[12]। उदाहरणस्वरूप, भट (2015) द्वारा जम्मू-कश्मीर के कुलगाम जिले में 200 विद्यार्थियों पर किए गए अध्ययन में निजी उच्च माध्यमिक छात्रों के औसत अंक (75%) सरकारी विद्यालय के छात्रों के औसत अंकों (62%) से काफी अधिक पाए गए[4]। इस अंतर के परिणामस्वरूप ज-परीक्षण द्वारा यह स्थापित हुआ कि निजी एवं सरकारी विद्यालय समूहों की उपलब्धियों में अंतर सांख्यिकीय रूप से है[4]। गनई एवं मकबूल (2013) ने कश्मीर के बारामूला जिले में इसी प्रकार निष्कर्ष निकाला कि निजी स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों का स्व-अवधारणा (Self & Concept) भी ऊँचा तथा अकादमिक प्रदर्शन बेहतर होता है, जबकि सरकारी स्कूलों के छात्र अपेक्षाकृत पिछड़ जाते हैं[13]। कई अन्य अध्ययन भी लगातार इंगित करते हैं कि संसाधन, शिक्षण गुणवत्ता और जवाबदेही की दृष्टि से निजी संस्थानों की बढ़त अकादमिक परिणामों में दिखाई देती है[12]।

हालांकि, विद्यालय प्रकार का प्रभाव सभी स्थितियों में एक-जैसा नहीं होता। कुछ उत्कृष्ट सरकारी शिक्षण संस्थान - जैसे कि केंद्रीय विद्यालय एवं जवाहर नवोदय विद्यालय - अपने शैक्षणिक परिणामों में अधिकांश निजी विद्यालयों से भी आगे रहे हैं[14]। उदाहरणस्वरूप, 2025 में CBSE कक्षा 12 परीक्षाओं में केंद्रीय सरकारी विद्यालयों (केवी, जेएनवी आदि) का औसत उत्तीर्ण प्रतिशत देश के निजी विद्यालयों से अधिक दर्ज किया गया[14]। यह इंगित करता है कि यदि सरकारी विद्यालयों को पर्याप्त संसाधन, कुशल शिक्षक एवं प्रशासनिक समर्थन मिले, तो वे भी शानदार परिणाम दे सकते हैं। फिर भी, व्यापक परिदृश्य में ग्रामीण एवं सामान्य सरकारी विद्यालयों की तुलना में निजी विद्यालयों का प्रदर्शन ऊँचा रहने की प्रवृत्ति अनेक अध्ययनों में उभर कर आई है[12]। इसका एक कारण यह भी बताया गया है कि लोग वर्तमान में अपने बच्चों को बेहतर परिणामों की उम्मीद में निजी विद्यालयों में प्रवेश दिलाना पसंद करते हैं, जिसके चलते सरकारी स्कूलों पर प्रदर्शन सुधारने का दबाव कम हो जाता है[15]।

भौगोलिक क्षेत्र (शहरी बनाम ग्रामीण) के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि- शहरी और ग्रामीण परिवेश के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करने वाले अध्ययनों से मिले निष्कर्ष मिश्रित तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। पारंपरिक रूप से यह धारणा रही है कि शहरी क्षेत्रों के विद्यालय, बेहतर अवसंरचना, सुविधाओं और स्टाफ उपलब्धता के चलते, ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में उच्च शैक्षिक परिणाम देते हैं। पूर्व के कुछ शोध ग्रामीण-शहरी उपलब्धि अंतर को स्पष्ट रूप से दर्शाते थे, जिसका एक संकेतक साक्षरता एवं नामांकन में शहरी बढ़त के रूप में देखा गया[6]। उदाहरणस्वरूप, 2021 की जनगणना के आँकड़ों के अनुसार शहरी भारत में साक्षरता दर ग्रामीण भारत की तुलना में लगभग 15 प्रतिशत अधिक थी[6], जो प्रारम्भिक स्तर पर शिक्षा की गुणवत्ता/पहुँच में अंतर दर्शाता है। शिक्षा में बुनियादी सुविधाओं, योग्य शिक्षकों तथा सहायक वातावरण की कमी के कारण ग्रामीण छात्रों का प्रदर्शन पिछड़ने की बातें लंबे समय तक कही जाती रही हैं।

हालाँकि, हाल के वर्षों में ग्रामीण-शहरी शैक्षिक उपलब्धि के अंतर में कमी दर्ज की गई है। कुछ ताजा अध्ययनों में पाया गया है कि ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों के औसत प्रदर्शन में कोई खास अंतर नहीं रहा। केरल में हुए उपर्युक्त अध्ययन में, जहाँ लिंग के आधार पर कोई अंतर नहीं मिला, वहीं ग्रामीण बनाम शहरी विद्यार्थियों की उपलब्धियों में भी उल्लेखनीय अंतर अनुपस्थित था (शाजिमोन - जोसफ, 2017)[9]। उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में 300 छात्रों पर केंद्रित एक शोध में भी गाँव और शहर के छात्रों की अकादमिक सफलता लगभग समान स्तर की पाई गई[16]। इन परिणामों से स्पष्ट होता है कि यदि शैक्षणिक माहौल और विद्यालयीय संसाधन उपयुक्त हों, तो ग्रामीण पृष्ठभूमि स्वयं में सफलता में बाधक कारक नहीं है। इसके विपरीत, कुछ मामलों में रोचक प्रवृत्तियाँ भी देखी गई हैं। लमारे (2024) द्वारा उत्तर-पूर्व भारत में किए गए एक अध्ययन ने इंगित किया कि कम उपलब्धि (Low Achievers) वाली श्रेणी में शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी ग्रामीण विद्यार्थियों से भी कम अंक प्राप्त कर रहे थे[17],। विशेष रूप से, जिन छात्रों का प्रदर्शन कुल मिलाकर निम्न स्तर का था, उनमें ग्रामीण पृष्ठभूमि के छात्रों के अंक शहरी गरीब छात्रों से बेहतर निकले[18]। लमारे के अनुसार इसका एक कारण यह हो सकता है कि महानगरीय वातावरण में कुछ कमजोर विद्यार्थियों को व्यक्तिगत ध्यान या मार्गदर्शन उतना नहीं मिल पाता जितना अपेक्षित है, जबकि ग्रामीण समुदायों में पारिवारिक अथवा शिक्षक स्तर पर उन पर अधिक ध्यान दिया जाता है[19]। इस निष्कर्ष ने शोधकर्ताओं का ध्यान शहरी निर्धन/हाशिये के विद्यार्थियों की ओर आकर्षित

किया है, जो भीड़भाड़ वाले स्कूलों या प्रतिस्पर्धी माहौल में पिछड़ सकते हैं। कुल मिलाकर, भौगोलिक आधार पर शैक्षिक उपलब्धि के अंतर अब पहले जितने व्यापक नहीं रहे और कई राज्यों में ग्रामीण एवं शहरी स्कूलों के बीच परिणामों की खाई घट रही है[7]। फिर भी, दूर-दराज के ग्रामीण क्षेत्रों में गुणात्मक शिक्षण, प्रशिक्षित शिक्षक की उपलब्धता, तथा शैक्षिक संसाधनों की कमी जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं, जिनका प्रभाव वहाँ के छात्रों की उपलब्धि पर देखा जा सकता है।

अनुसंधान- इस समीक्षा-अध्ययन में भारतीय परिप्रेक्ष्य में उच्च माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक उपलब्धि के तुलनात्मक शोधों को व्यवस्थित ढंग से एकत्रित और विश्लेषित किया गया। अध्ययन के चयन हेतु निम्न मानदंड रखे गए: (क) शोध भारत में संचालित एवं प्रकाशित होना चाहिए, (ख) अध्ययन में उच्च माध्यमिक (कक्षा 11-12) छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि मापी गई हो, तथा (ग) अध्ययन में लिंग, विद्यालय प्रकार अथवा ग्रामीण/शहरी परिवेश में से कम-से-कम एक कारक के आधार पर तुलना की गई हो। इन मानदंडों के अनुरूप कुल 18 शोधपत्रों एवं शैक्षिक सर्वेक्षण-अध्ययनों को समीक्षार्थ शामिल किया गया। संबंधित साहित्य को एकत्र करने के लिए विभिन्न शिक्षाविषयक डेटाबेस (जैसे ERIC, Google Scholar) और शोध पत्रिकाओंध्शोधप्रबंधों में विस्तृत खोज की गई। चुनिंदा प्रमुख कीवर्ड (जैसे Academic Achievement, Gender, School Type, Rural, Higher Secondary, India आदि) का प्रयोग कर 2010 से 2025 के बीच प्रकाशित अध्ययनों को प्राथमिकता दी गई, ताकि हाल के रुझानों की झलक मिल सके। एकत्रित अध्ययनों के निष्कर्षों का गुणात्मक एवं सांख्यिकीय विश्लेषण कर उनके बीच समानताओं-विभिन्नताओं को चिन्हित किया गया। अंततः इन शोध निष्कर्षों को वर्तमान समीक्षा-पत्र में विषयवार श्रेणियों (लिंग, विद्यालय प्रकार, भौगोलिक स्थिति) के अनुसार संरचित किया गया है, तथा सारणी एवं आरेख के माध्यम से तुलनात्मक विश्लेषण को दर्शाया गया है।

तुलनात्मक विश्लेषण - उपरोक्त साहित्य समीक्षा के आधार पर विभिन्न श्रेणियों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में जो अंतराल पाए गए हैं, उनका तुलनात्मक विश्लेषण निम्नलिखित प्रमुख बिंदुओं पर केंद्रित है। विशेषकर, लिंग, विद्यालय प्रकार और भौगोलिक स्थिति के अनुसार प्रदर्शन में अंतर की परिमाणात्मक तुलना के लिए एक ग्राफ और एक तालिका प्रस्तुत की गई है। इनसे सम्बद्ध रुझानों को नीचे वर्णित किया गया है:

लिंग के आधार पर उपलब्धि अंतर: राष्ट्रीय स्तर के आंकड़े दर्शाते हैं कि उच्च माध्यमिक परीक्षाओं में बालिकाओं की सफलता दर बालकों से अधिक होती है। CBSE 2025 की कक्षा 12 बोर्ड परीक्षा में उत्तीर्ण प्रतिशत को दर्शाया गया है, जिसमें बालिकाओं का पास प्रतिशत लगभग 91.6% तथा बालकों का 85.7% था। यह अंतर बालिकाओं की हल्की बढ़त को दिखाता है, जो देशव्यापी स्तर पर भी परिलक्षित होती है।

विद्यालय प्रकार के आधार पर उपलब्धि अंतर: विभिन्न अध्ययनों में यह स्थापित हुआ है कि निजी विद्यालयों के छात्र शैक्षणिक उपलब्धि में औसतन सरकारी विद्यालयों के छात्रों से आगे होते हैं[12],। तालिका-1 में एक उदाहरणस्वरूप जम्मू-कश्मीर के कुलगाम जिले के 200 छात्रों पर आधारित अध्ययन (भट, 2015) के निष्कर्ष प्रदर्शित हैं, जिसमें 100 निजी स्कूल व 100 सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों के औसत अंकों की तुलना की गई है। स्पष्टतः निजी विद्यालय समूह का औसत प्राप्तांक सरकारी विद्यालय समूह की तुलना में लगभग 13 अंकों से अधिक पाया गया, जो कि सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण अंतर था[4]। इस परिणाम से निजी और सरकारी स्कूलों के बीच गुणवत्ता व प्रदर्शन की विषमता प्रत्यक्ष होती है।

सारणी 1: निजी बनाम सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों के औसत परीक्षा अंक (कुलगाम, जम्मू-कश्मीर)[4]

समूह	N (नमूना आकार)	औसत प्राप्तांक(%)	मानक विचलन (SD)
निजी विद्यालय	100	75.12	12
सरकारी विद्यालय	100	62.41	13.2

स्रोत: उपरोक्त आंकड़े भट (2015) के अध्ययन से उद्धृत हैं, जिसमें कुलगाम जिले में विज्ञान तथा कला दोनों वर्गों के छात्रों को सम्मिलित कर औसत अंक प्रतिशत निकाले गए[4]। परिणामों के अनुसार निजी विद्यालय के विद्यार्थियों ने सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में उल्लेखनीय रूप से उच्च अंक प्राप्त किए (औसतन 13% अधिक)। अध्ययन में रिपोर्ट किया गया है कि यह अंतर ज-परीक्षण द्वारा 0.05 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से पुष्ट हुआ[4]। इस प्रकार, विद्यालय के प्रबंधन/प्रकार का विद्यार्थी की अकादमिक सफलता पर स्पष्ट प्रभाव देखा गया।

भौगोलिक (शहरी/ग्रामीण) आधार पर उपलब्धि अंतर: समीक्षित शोधों से पता चलता है कि शहरी बनाम ग्रामीण छात्रों के प्रदर्शन में अंतर कई मामलों में अपेक्षाकृत कम है। अनेक हालिया अध्ययनों (उदा., शाजिमोन - जोसफ, 2017, दाउन्द - कुमार, 2024) में ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक छात्रों के औसत अंकों में नगण्य अंतर पाया गया[7]। यह संकेत करता है कि वर्तमान समय में ग्राम एवं नगर क्षेत्रों के विद्यालयों के बीच शैक्षिक गुणवत्ता का अंतर धीरे-धीरे कम हो रहा है। फिर भी, कुछ विशेष स्थितियों में भौगोलिक कारक का असर दिख सकता है। उदाहरणस्वरूप, लमारे (2024) के अनुसार कम अंक वाले (Low & Achieving) विद्यार्थियों में शहरी छात्र ग्रामीण छात्रों से भी कमजोर प्रदर्शन कर रहे थे[17]। लमारे के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि निम्न उपलब्धि श्रेणी के शहरी विद्यार्थियों को पढ़ाई में संभवतः आवश्यक अतिरिक्त मार्गदर्शन नहीं मिल पा रहा था, जिसके कारण वे और पिछड़ गए[21]। इसके विपरीत, ग्रामीण क्षेत्र के कमजोर विद्यार्थियों को परिवार और समुदाय का अपेक्षाकृत अधिक सहयोग मिलने से उनके परिणाम थोड़ा बेहतर रहे[22]। इस प्रकार समग्र तौर पर देखें तो ग्रामीण बनाम शहरी विद्यार्थियों की उपलब्धि में औसत अंतर तो बहुत बड़ा नहीं है, लेकिन अलग-अलग आर्थिकध्सामाजिक पृष्ठभूमि वाले उपसमूहों में भिन्न रुझान मिल सकते हैं। इन अंतरों को ध्यान में रखते हुए क्षेत्र-विशेष पर केंद्रित शैक्षिक हस्तक्षेप की आवश्यकता है, जिससे शहरी निर्धन वर्ग तथा दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्र - दोनों के विद्यार्थियों को उपयुक्त समर्थन मिल सके।

चर्चा - उपस्थित समीक्षा के निष्कर्ष स्पष्ट करते हैं कि उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों में विद्यालय का प्रकार सबसे अधिक भिन्नता पैदा करने वाला कारक प्रतीत होता है, जबकि लिंग एवं भौगोलिक स्थिति के प्रभाव अपेक्षाकृत कम या सन्दर्भ-निर्भर हैं। दूसरे शब्दों में, यदि एक औसत छात्र की उपलब्धि की तुलना की जाए तो निजी विद्यालय बनाम सरकारी विद्यालय का अंतर (जैसा कि 13% का अंतर तालिका-1 में दिखा[4]) लैंगिक अंतर (5-6%) से काफी ज्यादा है। ग्रामीण-शहरी विभेद कई परिस्थितियों में नगण्य पाया गया है[7], विशेषकर जब अन्य सुविधाएँ व कारक संतुलित हों। इसका अर्थ यह है कि

शिक्षा की गुणवत्ता और संसाधनों की उपलब्धता, जो कि अक्सर विद्यालय के प्रकार एवं प्रबंधन से जुड़ी होती है, विद्यार्थियों के परिणामों पर सबसे अधिक असर डालती हैं।

लैंगिक अंतर के संभावित कारण: बालिकाओं द्वारा बालकों से बेहतर प्रदर्शन करने के पीछे अनेक सामाजिक व मनोवैज्ञानिक कारक प्रस्तावित किए गए हैं। आमतौर पर माना जाता है कि माध्यमिक स्तर पर छात्राएँ अध्ययन के प्रति अधिक अनुरूप ढंग से मेहनत करती हैं, उनकी उपस्थिति व होमवर्क पूर्णता दर बेहतर होती है, तथा वे अनुशासन का पालन करने में आगे रहती हैं। कुछ शोध संकेत देते हैं कि भावनात्मक परिपक्वता एवं समायोजन क्षमता में लड़कियाँ बालकों से आगे होती हैं, जो शैक्षिक उपलब्धि को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है[8,11]। चमुंडेश्वरी (2013) के अध्ययन में विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence) और उनकी अकादमिक सफलता के बीच सकारात्मक संबंध पाया गया था[23]। बालिकाओं में औसतन भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं पारिवारिक/सामाजिक सहयोग का स्तर ऊँचा होने से वे परीक्षा के दबाव और अध्ययन संबंधी चुनौतियों का सामना बेहतर तरीके से कर पाती हैं, जिससे परिणामों में उनकी बढ़त दिखाई देती है। दूसरी ओर, कुछ विषयों में लैंगिक रूझान उल्टे भी देखे जाते हैं द जैसे गणित और विज्ञान में कभी-कभी बालक थोड़ा आगे हो सकते हैं द पर समग्र परिणामों में ऐसा अंतर कम देखने को मिलता है[11]। इन निष्कर्षों का नीति-निर्माताओं के लिए अर्थ यह है कि जहाँ बालिकाओं को विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग एवं गणित (STEM) क्षेत्रों में आगे बढ़ने हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, वहीं बालकों को भाषा एवं सामाजिक विज्ञान जैसे क्षेत्रों में अधिक अभिरुचि और प्रदर्शन सुधारने के लिए प्रेरित करने की आवश्यकता है, ताकि दोनों लैंगिक समूह सभी विषयों में संतुलित रूप से उत्कृष्ट कर सकें।

विद्यालय प्रकार संबंधी अंतर के कारण: निजी और सरकारी विद्यालयों के बीच प्रदर्शन के अंतर को विभिन्न अध्ययनों ने गहराई से विश्लेषित किया है। सरकारी विद्यालयों में अक्सर बुनियादी ढाँचे की कमी, बड़े छात्र-शिक्षक अनुपात, योग्य शिक्षकों की कमी एवं प्रशासनिक उदासीनता जैसी समस्याएँ पाई जाती हैं[24,25]। भट (2015) के निष्कर्षों के अनुसार कई सरकारी स्कूलों में नियमित शिक्षकों के पद रिक्त रहते हैं और अस्थायी या अप्रशिक्षित शिक्षकों के भरोसे काम चलता है, जिससे शिक्षण की गुणवत्ता प्रभावित होती है[24]। इसके विपरीत निजी विद्यालयों में शिक्षक नियुक्ति, निगरानी एवं जवाबदेही की सख्त व्यवस्था होती है - यदि परिणाम खराब हों तो शिक्षकोंध्प्रबंधन पर तुरंत दबाव आता है या कार्रवाई हो सकती है[26]। इसी कारण निजी स्कूल शिक्षक एवं प्रशासक अपने छात्रों के परिणाम सुधारने के लिए अतिरिक्त प्रयास करते हैं। जम्मू-कश्मीर बोर्ड के एक उदाहरण में पाया गया कि निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में जहाँ कई स्कूलों का उत्तीर्ण प्रतिशत 100% था, वहीं कुछ सरकारी स्कूल 0% परिणाम के साथ भी थे[27]। यह फर्क काफी हद तक शिक्षकों की कार्यसंस्कृति और विद्यालयी माहौल से जुड़ा है द सरकारी सिस्टम में नौकरी की सुरक्षा होने से कुछ शिक्षकों में उदासीनता आ सकती है, जबकि निजी क्षेत्र में परिणाम-आधारित जवाबदेही तय होती है[28]। इसके अलावा, अभिभावकों का रुख भी मायने रखता है: सरकारी स्कूलों में अधिकांशत: अपेक्षाकृत कम जागरूक या निम्न-आय वर्ग के अभिभावकों के बच्चे पढ़ते हैं, जिनमें से कुछ अपने बच्चों की पढ़ाई पर उतना ध्यान नहीं दे पाते[25]। दूसरी तरफ, निजी स्कूलों में अभिभावक अधिक फीस चुकाते हैं और वे शिक्षकों व बच्चों पर लगातार अच्छा करने का दबाव बनाए रखते हैं। इन सभी कारकों का सम्मिलित परिणाम निजी बनाम सरकारी विद्यालयों के प्रदर्शन अंतर के रूप में सामने आता है। इसे कम करने के लिए सरकारी विद्यालयों में शिक्षण गुणवत्ता सुधारने, शिक्षकों की जवाबदेही तय करने, खाली पद भरने और शिक्षण संसाधन बढ़ाने की नीतियाँ अत्यंत आवश्यक हैं[24,29]। सरकार द्वारा हाल में किए गए कुछ प्रयास (जैसे नवोदय विद्यालय का विस्तार, शिक्षकों का प्रशिक्षण, राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के तहत अवसंरचना सुधार) स्वागतयोग्य हैं, परंतु इन्हें और अधिक व्यापक तथा प्रभावी बनाने की जरूरत है ताकि सभी सरकारी स्कूल प्रतिस्पर्धी प्रदर्शन दे सकें।

ग्रामीण-शहरी अंतर के कारण एवं समाधान: ग्रामीण बनाम शहरी छात्रों के शैक्षिक प्रदर्शन में अंतर का मूल स्रोत मुख्यत: शैक्षिक सुविधाओं एवं सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों में अंतर रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में योग्य शिक्षकों की कमी और शिक्षक पदों का रिक्त रहना एक गंभीर समस्या रही है, जिसके कारण पढ़ाई की निरंतरता और गुणवत्ता प्रभावित होती है। ग्रामीण स्कूलों में विषय-विशेष के अध्यापकों (जैसे गणित, विज्ञान) की अनुपलब्धता से छात्रों की तैयारी कमजोर रह जाती है[24]। साथ ही, कई ग्रामीण परिवारों में शिक्षा के प्रति जागरूकता का अभाव और बच्चों से घरेलूध्खेती के कार्यों में मदद की अपेक्षा भी उनके अध्ययन समय व एकाग्रता को प्रभावित करती है[25]। दूसरी ओर, शहरी क्षेत्रों में स्कूल अपेक्षाकृत अच्छे संसाधनों से युक्त होते हैं, पुस्तकालय, लैब, ट्यूशन जैसी सुविधाएँ आसानी से उपलब्ध हैं, तथा अभिभावकों में प्रतिस्पर्धी माहौल के कारण बच्चों को आगे बढ़ाने की प्रवृत्ति ज्यादा होती है। इन कारकों ने परंपरागत रूप से शहरी बच्चों को शैक्षणिक बढ़त दिलाई। फिर भी, हाल के वर्षों में सरकार द्वारा ग्रामीण शिक्षा पर विशेष ध्यान देने से स्थिति में सुधार दिख रहा है। प्रत्येक जिले में मॉडल स्कूलों की स्थापना, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT) द्वारा समय-समय पर राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (NAS) संचालित कर कमजोर क्षेत्रों की पहचान, तथा डिजिटल शिक्षा के प्रसार से ग्रामीण-शहरी अंतर कम करने के प्रयास जारी हैं। समीक्षा में शामिल कुछ नवीन शोधों ने ग्रामीण और शहरी छात्रों के बीच प्रदर्शन अंतर लगभग समाप्त होने की खबर दी है[7], जो एक सकारात्मक संकेत है। फिर भी, लमारे (2024) जैसे अध्ययनों ने आगाह किया है कि शहरी वातावरण में स्वयं को स्थापित न कर पाने वाले हाशिए के विद्यार्थियों (विशेषत: निम्न आयवर्ग के) पर ध्यान देना जरूरी है[19]। महानगरों के बड़े सरकारी स्कूलों या भीड़भाड़ वाले निजी स्कूलों में पढ़ने वाले कुछ छात्रों को व्यक्तिगत मार्गदर्शन नहीं मिल पाता और वे प्रतिस्पर्धा में पिछड़ सकते हैं। अत: शिक्षा विभाग को शहरों में रेमेडियल क्लास, परामर्श तथा सामाजिक समर्थन तंत्र को मजबूत करना चाहिए ताकि कोई छात्र पीछे न रह जाए। साथ ही दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं (भवन, बिजली, इंटरनेट), परिवहन, तथा माध्यमिक स्तर के लिए प्रशिक्षित शिक्षकों की उपलब्धता सुनिश्चित करनी होगी, ताकि ग्रामीण प्रतिभाएँ भी समान रूप से उभर सकें।

सीमाएँ और आगे का मार्गरू इस समीक्षा में प्रयुक्त अध्ययनों की कुछ सीमाएँ भी उल्लेखनीय हैं। अधिकांश शोध क्षेत्र-विशिष्ट थे तथा अपेक्षाकृत छोटे नमूने पर आधारित थे। विभिन्न राज्यों की भौगोलिक, सामाजिक एवं आर्थिक भिन्नताओं के कारण शैक्षिक उपलब्धि के कारकों का प्रभाव अलग-अलग हो सकता है - उदाहरणत: किसी राज्य में लिंग-अंतर नगण्य हो

सकता है जबकि दूसरे राज्य में सामाजिक कारकों के कारण स्पष्ट अंतर दिख सकता है। अत: इन निष्कर्षों का व्यापक स्तर पर अनुप्रयोग करने से पहले सावधानी बरतनी होगी। साथ ही, कई अध्ययनों ने एक-एक कारक (केवल लिंग या केवल विद्यालय-प्रकार) पर पृथक रूप से ध्यान केंद्रित किया है, भविष्य में ऐसे शोधों की आवश्यकता है जो एक साथ बहु-कारक विश्लेषण करते हुए यह देखें कि, ग्रामीण क्षेत्रों की बालिकाओं के निजी बनाम सरकारी स्कूलों में क्या रुझान हैं या शहरी क्षेत्रों में बालक छात्रों की उपलब्धि सरकारी बनाम निजी विद्यालयों में कैसी है। इस तरह के दोहरे या तिहरे कारक-संयोजन अध्ययनों से नीति-निर्माताओं को अधिक स्पष्ट चित्र मिल सकेगा। इसके अतिरिक्त, समयक्रमिक रुझान पकड़ने के लिए लम्बवत (Longitudinal) अध्ययन भी उपयोगी होंगे ताकि देखा जा सके कि क्या इन अंतरालों में समय के साथ कमी या वृद्धि हो रही है। उदाहरणस्वरूप, क्या बालिकाओं की बढ़त आने वाले वर्षों में भी बनी रहती है या बालक अंतर कम कर पा रहे हैं - ऐसे प्रश्न अनुत्तारित हैं जिन्हें आगे के शोध में संबोधित किया जा सकता है।

निष्कर्ष - उच्च माध्यमिक स्तर पर छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के तुलनात्मक अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष बताते हैं कि अलग-अलग सामाजिक एवं संस्थागत कारक विद्यार्थियों के अकादमिक परिणामों में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। इस समीक्षा में केवल भारतीय संदर्भ में किए गए शोधों के आधार पर पाया गया कि बालिकाओं ने हाल के वर्षों में शैक्षणिक प्रदर्शन में बालकों को कुल मिलाकर पीछे छोड़ दिया है, हालांकि यह बढ़त सभी विषयों या सभी राज्यों में समान रूप से नहीं दिखाई देती। इसी प्रकार निजी प्रबंध वाले विद्यालयों में छात्रों के परिणाम औसतन बेहतर रहे हैं, विशेषकर संसाधन सम्पन्नता और जवाबदेही की संस्कृति के कारण, जबकि सरकारी विद्यालयों को व्यापक चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच औसत शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पूर्व अनुमान से कम पाया गया, जो ग्रामीण शिक्षा प्रणाली में सुधार एवं शहरी क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धात्मक तनाव द दोनों का परिणाम हो सकता है। समग्र दृष्टि से, सबसे बड़ा अंतर विद्यालयों की गुणवत्ता में देखा गया, जबकि लिंग एवं स्थान संबंधी अंतर अपेक्षाकृत हल्के या परिवर्तनीय रहे।

इन अंतर्दृष्टियों के आलोक में शिक्षा नीति एवं व्यवहार में कुछ महत्वपूर्ण कदम सुझाए जा सकते हैं। प्रथम, सरकारी विद्यालयों की गुणवत्ता सुधारना और उन्हें निजी विद्यालयों के समकक्ष लाना एक आवश्यक लक्ष्य होना चाहिए द इसके लिए बुनियादी ढाँचे का विकास, शिक्षकों की प्रशिक्षण व भरती, तथा उनके प्रदर्शन मूल्यांकन की प्रभावी प्रणाली बनानी होगी। द्वितीय, बालिकाओं की शैक्षणिक बढ़त को बनाए रखते हुए बालकों को भी पढ़ाई के प्रति उत्साह एवं अनुशासन विकसित करने में सहायता दी जानी चाहिए, खासकर ऐसे क्षेत्र (जैसे भाषा कौशल) जहाँ उनके परिणाम अपेक्षाकृत कमजोर हैं। तृतीय, ग्रामीण तथा नगर-पोस्ट के बीच शिक्षा में अवसर की असमानता को पाटने हेतु संसाधनों का न्यायसंगत वितरण जरूरी है - ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल तकनीक, ऑनलाइन सामग्री और दूरस्थ शिक्षण कार्यक्रमों का विस्तार प्रतिभाशाली छात्रों को आगे लाने में सहायक होगा। साथ ही शहरों के निम्न आयवर्ग के विद्यार्थियों के लिए ट्यूशन सहायता, परामर्श और आकादमिक मेंटरशिप जैसी योजनाएँ लागू की जानी चाहिए जिससे वे प्रतिस्पर्धा में बने रहें। अंतत:, शिक्षा में समानता (Equity) सुनिश्चित करना सतत विकास का एक महत्वपूर्ण अंग है। इस समीक्षा-पत्र में प्राप्त निष्कर्ष नीति-निर्माताओं और शिक्षाविदों को उन क्षेत्रों की पहचान करने में सहायता प्रदान करते हैं जहाँ विशेष ध्यान एवं हस्तक्षेप की आवश्यकता है। यदि लिंग, विद्यालय-प्रकार एवं भौगोलिक स्थिति से जुड़े शैक्षिक अंतरालों को प्रभावी ढंग से कम किया जाता है, तो अधिकाधिक विद्यार्थियों को अपनी पूर्ण क्षमता विकसित करने का अवसर मिलेगा और राष्ट्र की मानव संसाधन क्षमता में गुणात्मक वृद्धि हो सकेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. Archana, A. (2002)- Some correlates of academic achievement- Indian Journal of Educational Research, 21, 75&76.
2. Bhat] B- A- (2015)- Government–Private disparity in relation to the senior secondary students* academic achievement- Indian Journal of Applied Research] 5(1)152&154.
3. Chamundeswari, S. (2013)- Emotional intelligence and academic achievement among students at the higher secondary level- International Journal of Academic Research in Economics and Management Sciences] 2(4)] 178&187.
4. Ganai, M. Y. & Maqbool, A. (2013)- Self&concept and academic achievement of government and private higher secondary students – District Baramulla] Kashmir- World Rural Observations, 5(1) 19&21.
5. Joseph, P. P. & Sahu, R. (2017)- Comparative study of mental health and academic achievement of adolescent girls of co&educational schools and girls schools in urban area- Vidyawarta – International Multilingual Research Journal] 12(17) 58&62.
6. Kingdon, G. G. (1996)- The quality and efficiency of public and private education: A case&study of urban India- Oxford Bulletin of Economics and Statistics] 58(1) 57&82.
7. Kumar, A., & Rathour, M.S. (2020). Comparative study of academic achievement of higher secondary students of Uttar Pradesh state in India- Journal of Management and Science, 10(1), 27&31.
8. Lamare, R. (2024)- A study of academic achievement between rural and urban within high] average and low achievers students- International Journal for Multidisciplinary Research, 6(5), 1&7.
9. Mallai, M. & Humtsoe, A. (2025)- Gender disparities in academic performance: A study of secondary school students in Ri&Bhoi District- International Journal for Multidisciplinary Research] 7(1) 1&7.
10. Maqbool, A- (2014)- Scientific temper and academic achievement of science and social science stream adolescents in District Baramulla, Kashmir- International Journal of Humanities and Social Sciences Research, 1(1) 83&89.
11. Shajimon, P. P., & Joseph, S.- (2017)- A study on the academic achievement of higher secondary students based on locale and gender- Journal of Emerging

Technologies and Innovative Research, 4(6)542&546.
12. Sud, A., & Sujata. (2006)- Academic performance in relation to self&handicapping] test anxiety and study habits of high school children- National Academy of Psychology Journal, 51(4) 304&309.
13. Suman, & Sharma, S. (2025)- A study of academic achievement and social maturity among senior secondary school students- Journal of East&West Thought, 15.1) 38&56- (DOI: 10-7492/sp8s2116)
14. Chauhan, S., & Sharma, A. (2017)- A study of relationship between creativity and academic achievement among public and private school students in both genders- International Journal of Science Technology and Management] 6(1), 410&415-
15. Daud] S., & Kumar, M- (2024)- A comparative study of academic achievement of private and government senior secondary school students in Meerut district- ShodhKosh Journal of Visual and Performing Arts] 5(6)] 3685–3690-[8][16][1][2][4][12][13][15][24][25][26][27][28][29]files.eric.ed.gov
16. https://files-eric-ed-gov/fulltext/ED610337.pdf
17. [3][14][20] Girls outperform boys in CBSE board exams | Latest News India https://www.hindustantimes.com/india&news/girls&outperform&boys&i n&cbse&board &eÛams&101747201394511.html.
18. The Private Schooling Phenomenon in India: A Review https://www.tandfonline.com/doi/abs/10-1080/00220388-2020-1715943
19. Comparative Analysis of Educational Attainment in Rural and Urban -https://socialresearchfoundation.com/new/publish&journal.php\editID\10403
20. [7][16][23] A COMPARATIVE STUDY OF ACADEMIC ACHIEVEMENT OF PRIVATE AND GOVERNMENT SENIOR SCHOOL STUDENT IN MEERUT DISTRICT | ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts https://www.granthaalayahpublication.org/Arts&Journal/ShodhKosh/article/view/6494
21. A study of Academic Achievement and Social Maturity among Senior Secondary School Students | Journal of East&West Thought (JET) ISSN (O) : 2168&2259 UGC CARE I https://jetjournal.us/indeÛ.php/journals/article/view/194
22. [9][10] JETIR Research Journal https://www.jetir.org/papers/JETIR1706101-pdf
23. [11] ijfmr-com https://www.ijfmr.com/papers/2025/1/37978-pdf
24. [17][18][19][21][22] ijfmr.com https://www.ijfmr.com/papers/2024/5/29176-pdf

****